https://printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

सिस्टमिक लुपस एरीदीमॅटोसस

के संस्करण 2016

१. सिस्टमिक लुपस एरीदीमॅटोसस क्या होता है?

१.१ यह क्या होता है?

सिस्टमिक लुपस एरीदीमॅटोसस (एसएलई) एक ऑटोइम्मुन बीमारी है जो हमारे शरीर के विभिन्न अंगों को नुकसान पहुंचा सकती है, ख़ास कर के त्वचा, दिमाग, गुर्दे,एवं खून की नसेंI यह बीमारी क्रोनिक यानि लम्बे समय तक चलने वाली होती है।ऑटोइम्मुन यानी यह इस बीमारी में हमारी प्रतिरक्षा शक्ति, जो हमें बैक्टीरिया, वायरस आदि से बचाने में मदद करती है, हमारे ही शरीर के विपरीत काम करने लगती है और हमारे शरीर के अंगों को नुकसान पहुंचाने लगती है

सिस्टमिक लुपस एरीदीमॅटोसस बीसवीं सदी की शुरुआत से जानी गयी है। सिस्टमिक यानी जो शरीर के विभिन्न अंगों पर असर करे,लुपस शब्द लैटिन भाषा में भेड़िये के लिए इस्तेमाल करा जाता है और एसएलई में रोगी के चेहरे पर दिखाई देने वाले तितली के आकर की लाली, भेड़िये के चेहरे पर दिखाई देने वाली सफ़ेद धारी से मिलती है। ग्रीक भाषा में " एरीदीमॅटोसस " का अर्थ लाल होता है और एस एल ई में चेहरे की लाली के कारण इस शब्द का प्रयोग किया गया है।

१.२ यह बीमारी कितनी आम है?

एसएलई की बीमारी विश्व भर में पहचानी जाती है।यह बीमारी एशियाई, अफ़्रीकी व् अफ़्रीकी अम्रेरिकन बच्चों में ज़्यादा पायी जाती है।यूरोप में यह बीमारी २५०० में से एक बच्चे में देखी जाती है और १५ % बच्चे १८ वर्ष से काम आयु के होते हैं।१८ वर्ष से काम की आयु में शुरू होने वाली एसएलई की बीमारी को कई नाम दिए गए हैं जैसे:पीडियाट्रिक एसएलई, जुवेनाइल एसएलई, चाइल्डहुड एसएलई। १५ से ४५ वर्ष की महिलाओं में यह बीमारी अधिक पायी जाती है और पुरूषों की तुलना में महिलाओं को यह बीमारी ९ गुना अधिक हो सकती है। किशोरावस्था से पहले लड़कों में यह बीमारी अधिक हो सकती है।

१.३ यह बीमारी किस कारण से होती है?

इस बीमारी के होने के ठोस कारण की जानकारी नहीं है। यह छुआछूत की बीमारी नहीं है व् एक से दूसरे को नहीं फैलती है।वैज्ञानिक सुरागों से यह जानकारी मिलती है की यह ऑटोइम्मुन बीमारी है जिसमे हमारे शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति बाहर के शत्रुओं जैसे बैक्टीरिया, वायरस एवं अपने शरीर के अंगों के बीच में फर्क नहीं कर पाती और शरीर के विरुद्ध दूषित पदार्थ बनाने लगती है जो हमारे शरीर में इंफ्लैममेशन यानो प्रज्ज्वलन कर उसे हानि पहुंचाते हैं।प्रज्ज्वलित अंग गरम, लाल, सूजा हुआ अथवा छूने पर दुखन करता है।यदि शरीर में अधिक समय तक किसी अंग में प्रज्ज्वलन रहे तो वह उस अंग को हानि पहुंचा कर उसके कार्य को प्रभावित कर सकता है।इस बीमारी में इसीलिए प्रज्ज्वलन को काम करने के लिए दवा दी जाती है।
प्रतिरक्षा शक्ति की इस खराबी के लिए पर्यावरण में पाये जाने वाले कारण के अलावा जेनेटिक या अनुवांशिक कारण भी हो सकते हैं।किशोरावस्था में होने वाले हॉर्मोन परिवर्तन,ज्यादा समय धुप में रहना,वायरल बुखार एवं कई दवाइयाँ भी इस बीमारी को उभार सकती हैं।

१.४ क्या यह जेनेटिक या वंशानुगत रोग है?

यह बीमारी परिवार में पायी जा सकती है परन्तु यह बीमारी जेनेटिक नहीं होती।बच्चे अपने माता पिता से कुछ अनुवांशिक अंश लेते हैं जिनके कारन इस बीमारी के होने की संभावना बढ सकती है परन्तु बीमारी हो ही जाएगी ऐसा मानना गलत होगा।यह बीमारी परिवार में पायी जा सकती है परन्तु यह बीमारी जेनेटिक नहीं होती।बच्चे अपने माता पिता से कुछ अनुवांशिक अंश लेते हैं जिनके कारन इस बीमारी के होने की संभावना बढ सकती है परन्तु बीमारी हो ही जाएगी ऐसा मानना गलत होगा।यहाँ तक की जुड़वां बच्चों में भी यही बीमारी होने की संभावना ५०% से भी काम होती है।इस बीमारी के लिए कोई जेनेटिक टेस्टिंग या भ्रूण में इस बीमारी का पता लगाने की कोई जांच उपलब्ध नहीं है।

१.५. क्या इस बीमारी से बचाव किया जा सकता है?

इस बीमारी के होने की ठोस वजह की जानकारी न होने की वजह से इस बीमारी से बचाव नहीं किया जा सकता परन्तु जिस बच्चे को यह बीमारी हो गयी हो उसे कुछ परहेज़ की आवश्यकता होती है जिससे यह बीमारी बढ़ सकती है जैसे मानसिक तनाव,बहुत देर धुप में रहना,हॉर्मोन व् कुछ दवाइयाँ

१.६. क्या यह छुआछूत की बीमारी है?

नहीं,यह बीमारी छुआछूत की नहीं है व् एक व्यक्ति से दूसरी को नहीं हो सकती।

१.७.इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या है?

यह बीमारी पूरी तरह से उभर कर आने में हफ्ते,महीने या साल भी लगा देती है।जल्दी थकान

होना,शरीर में दर्द रहना,कभी कभी या हर दिन हल्का बुखार महसूस करना,वज़न में कमी आना, भूख न लगना इत्यादि इस बीमारी के शुरूआती लक्षण होते हैं।
समय के साथ साथ इस बीमारी में पाये जाने वाले विभिन्न लक्षण आने लगते हैं,अधिकतर त्वचा व् मुंह पर असर देखा जाता है।त्वचा पर विभिन्न तरह के दाग या धुप के कारण लाली आ सकती है।नाक के अंदर या मुंह में छाले आ सकते हैं।१/३ से १/२ बच्चों में गालों और नाक के ऊपर तितली के आकर की लाली वाला दाग दिखाई देता है।कुछ बच्चों में बालों का अत्याधिक झड़ना देखा जाता है।ठण्ड में हाथों का सफ़ेद,नीला व् लाल पड़ना भी इस बीमारी में देखा जाता है(रेनॉड फेनोमेनन)।जोड़ों की अकड़न व् सूजन,मांसपेशियों में दर्द,खून की कमी, हलकी चोट लगने पर तुरंत नील पड़ना,सर व् छाती में दर्द होना अथवा दौरे पड़ना भी इस बीमारी में देखे जाते हैं।कई बच्चों में गुर्दों पर प्रभाव देखा जाता है और गुर्दों पर प्रभाव बीमारी की तीव्रता बताता है।
उच्च रक्तचाप, पेशाब में खून अथवा प्रोटीन जाना,आँखों के ऊपर,चेहरे व् पैरों पर सूजन आना, गुर्दों के प्रभावित होने के प्रमुख लक्षण हैं।

१.८. क्या हर बच्चे की बीमारी एक जैसी होती है?

इस बीमारी के लक्षण सब में अलग तरह से आते हैं।किसी में ज्यादा तीव्रता के साथ तोह किसी में हलके।कुछ बच्चों में एक समय पर कुछ ही लक्षण दिखाई देते हैं व् समय के साथ बीमारी पूरी तरह उभर कर आती है। समय पर सही इलाज करने से बीमारी की तीव्रता काम हो जाती है।

१.९. क्या बच्चों में पायी जाने वाली एसएलई की बीमारी वयस्कों की बीमारी से भिन्न होती है?

आमतौर से बच्चों व् वयस्कों में यह बीमारी एक सी होती है पर बच्चों में यह बीमारी वयस्कों की तुलना में ज्यादा गंभीर होती है। बच्चों में इस बीमारी से गुर्दे व् दिमाग भी ज्यादा प्रभावित होते हैं।